Hindubhajan.in

श्री दुर्गा चालीसा पाठ

नमो नमो दुर्गेदुर्गेसुख करनी ।
नमो नमो दुर्गेदुर्गेदुः ख हरनी ॥

नि रंकारं कार है ज्यो ति तुम्हा री ।
ति हूं लो क फैली उजि या री ॥

शशि लला ट मुख महा वि शा ला ।
नेत्र ला ल भृकुटि वि करा ला ॥

रूप मा तु को अधि क सुहा वे।
दरश करत जन अति सुख पा वे॥

तुम संसासं सार शक्ति लै की ना ।
पा लन हेतु अन्न धन दी ना ॥

अन्नपूर्णा हुई जग पा ला ।
तुम ही आदि सुन्दरी बा ला ॥

प्रलयका ल सब ना शन हा री ।
तुम गौ री शि वशंकशं र प्या री ॥

शि व यो गी तुम्हरे गुण गा वें।
ब्रह्मा वि ष्णु तुम्हें नि त ध्या वें॥

रूप सरस्वती को तुम धा रा ।
दे सुबुद्धि ऋषि मुनि न उबा रा ॥

धरयो रूप नरसिं ह को अम्बा ।
परगट भई फा ड़कर खम्बा ॥

रक्षा करि प्रह्ला द बचा यो ।
हि रण्या क्ष को स्वर्ग पठा यो ॥

लक्ष्मी रूप धरो जग मा हीं ।
श्री ना रा यण अंगअं समा हीं ॥

क्षी रसि न्धु में करत वि ला सा ।
दया सि न्धु दी जै मन आसा ॥

हिं गला ज में तुम्हीं भवा नी ।
महि मा अमि त न जा त बखा नी ॥

मा तंगीतं गी अरु धूमा वति मा ता ।
भुवनेश्वरी बगला सुख दा ता ॥

श्री भैरभैव ता रा जग ता रि णी ।
छि न्न भा ल भव दुः ख नि वा रि णी ॥

केहरि वा हन सो ह भवा नी ।
लां गुर वी र चलत अगवा नी ॥

कर में खप्पर खड्ग वि रा जै।
जा को देख का ल डर भा जै॥

सो है अस्त्र और त्रि शूला ।
जा ते उठत शत्रु हि य शूला ॥

नगरको ट में तुम्हीं वि रा जत।
ति हुंलोहुं लोक में डंका बा जत॥

शुंभशुं नि शुंभशुं दा नव तुम मा रे।
रक्तबी ज शंखशं न संहासं हारे॥

महि षा सुर नृप अति अभि मा नी ।
जेहि अघ भा र मही अकुला नी ॥

रूप करा ल का लि का धा रा ।
सेन सहि त तुम ति हि संहासं हारा ॥

परी गा ढ़ संतसं न पर जब जब।
भई सहा य मा तु तुम तब तब॥

अमरपुरी अरु बा सव लो का ।
तब महि मा सब रहें अशो का ॥

ज्वा ला में है ज्यो ति तुम्हा री ।
तुम्हें सदा पूजें नर-ना री ॥

प्रेम भक्ति से जो यश गा वें।
दुः ख दा रि द्र नि कट नहिं आवें॥

ध्या वे तुम्हें जो नर मन ला ई।
जन्म-मरण ता कौ छुटि जा ई॥

जो गी सुर मुनि कहत पुका री ।
यो ग न हो बि न शक्ति तुम्हा री ॥

शंकशं र आचा रज तप की नो ।
का म अरु क्रो ध जी ति सब ली नो ॥

नि शि दि न ध्या न धरो शंकशं र को ।
का हु का ल नहिं सुमि रो तुमको ॥

शक्ति रूप का मरम न पा यो ।
शक्ति गई तब मन पछि ता यो ॥

शरणा गत हुई की र्ति बखा नी ।
जय जय जय जगदम्ब भवा नी ॥

भई प्रसन्न आदि जगदम्बा ।
दई शक्ति नहिं की न वि लम्बा ॥

मो को मा तु कष्ट अति घेरो ।
तुम बि न कौ न हरै दुः ख मेरो ॥

आशा तृष्णा नि पट सता वें।
रि पू मुरख मौ ही डरपा वे॥

शत्रु ना श की जै महा रा नी ।
सुमि रौं इकचि त तुम्हें भवा नी ॥

करो कृपा हे मा तु दया ला ।
ऋद्धि -सि द्धि दै करहु नि हा ला ।
जब लगि जि ऊं दया फल पा ऊं ।
तुम्हरो यश मैं सदा सुना ऊं ॥

दुर्गादुर्गा चा ली सा जो को ई गा वै।
सब सुख भो ग परमपद पा वै॥

देवी दा स शरण नि ज जा नी ।
करहु कृपा जगदम्ब भवा नी ॥

॥ इति श्री दुर्गादुर्गा चा ली सा सम्पूर्ण ॥

Visit Website: HINDUBHAJAN.IN